Chapter-8

अष्टम परिच्छेद

1- प्रतीक नाटकों का पुनर्मूल्यांकन

2- प्रतीक नाटकों का भविष्य

3- उपसंहार

4- परिशिष्ट

प्रतीक नाटकों का पुनर्मूल्यांकन :---

साहित्य की समस्त विधाओं में नाट्यकला का आस्वाद जीवन मूल्यों पर आधारित है । मूल्यों का अंकन एवं उसका प्रतिबिम्बन नाट्य अस्मिता को लोकधर्मिता से जोड़ता है । "विस्तृत रूप से नाटक नाटक का इतिहास नाटकीय मूल्यों के बदलाव का इतिहास है ।" 1 नाटक की वस्तु, संरचना एवं शिल्प का प्रत्येक हिस्सा सामाजिक एवं राजनैतिक विचारधारा से अनुस्यूत है । अतः सामाजिक विचार - धाराओं के साथ-साथ नाटकों का पुनर्मूल्यांकन आवश्यक हो जाता है । विगत तीन दशकों में वैयक्तिक , सामाजिक , बौद्धिक एवं नैतिक मूल्यों के विघटन के कारण राष्ट्रीय जिन्दगी में संकीर्णता, क्षुद्रता एवं दिशा - हीनता का उन्मेश हुआ है । समकालीन युग में हमारा परिवार, हमारे परिवार का हर पहलू, समाज की हर संस्था संबंधों के बिना मूल्यहीनता का जीवन जी रही है । उसके बीच प्रेम, दया, श्रद्धा , परोपकार, आदर्श , सहिष्णुता, सह-अस्तित्व आदि के भाव क्षीण होते जा रहे हैं । वात्सल्य प्रेम, भाई-बहन के संबंध , दाम्पत्य जीवन, वैवाहिक संबंध सभी विछोह एवं घुटन की स्थिति में गुजर रहे हैं । समय एवं परिस्थितियों के अनुकूल आज वैयक्तिक स्वतंत्रता की धूम में उपजे पीढ़ी-दरपीढ़ी संघर्ष, नारी जागरण,प्रेम एवं यौन संबंधों की अकुलाहट ने आदर्शों और संबंधों पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है । समकालीन युग में उभर रहे शोषण और रिश्वतखोरी से देश में मूल्य संकट की उपस्थित उत्पन्न हो गयी है । आर्थिक क्षेत्र में हो रहे वर्ग संघर्ष पूंजीवादी एवं समाजवादी संघर्ष, अर्थवैषम्य आदि ने भारतीय जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है । यही नहीं अवसरवाद , दलवाद, भाई भतीजावाद, लालफीताशाही आदि की दुर्भावनाओं से प्रशासनिक व्यवस्था एवं देश प्रेम की गरिमा संकुचित हो गयी है । राजनैतिक क्षेत्र में राष्ट्रविकास के नाम पर भ्रष्टाचार, अराजकता , तथा लक्ष्यहीनता को बढ़ावा मिला है । जाति-धर्म , एवं प्रान्तीयता के

1- इंसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटैनिका वाल्यूम - 7 : एफ० एस० बोस - पृष्ठ - 576

नाम पर होने वाले साम्प्रदायिक संघर्षों के कारण भारतीय समाज रोगग्रस्त हो गया है ।

समकालीन युग में लिखे जा रहे नाटकों में वर्तमान मानव-जीवन के यथार्थ और उसके परिवेशगत स्थितियों का पुनर्मूल्यांकन करना आवश्यक हो जाता है । इस युग की अवधि में लिखा जा रहा प्रतीक नाटक मान्यताओं से जुड़े विघटन एवं बदलाव के बीच नई जिजीविषा की खोज से भरा है ।

कमलेश्वर ने "अधूरी आवाज " नाटक में नारी वर्ग के मशीनी सोच , उसकी कामजन्य चंचलता तथा उसके द्वारा विचारों के लादने के जुल्म में खंडित होती हुई पारिवारिक संवेदना का बोध कराया है । इसी प्रकार मोहन राकेश का "आधे-अधूरे" आधुनिक भारतीय जिन्दगी का दस्तावेज है उसमें अर्थग्रस्त मध्यम वर्गीय परिवार की कुंठा और विवसता साकार हुई है । अर्थाभाव के कारण सावित्री और महेन्द्र बोरियत की जिंदगी गुजारते हैं । इस नाटक में पति-पत्नी के संबंधों की घुटन तथा विश्वराव के द्वारा सनातन भारतीय परिवार की उन्मूलन की सुन्दर झाँकी प्रस्तुत की गई है । यह नाटक आज के विसंगत नगरीय परिवेश के बीच परिवर्तित परंपरा का बोध देता है । सुरेन्द्र वर्मा ने "द्रौपदी" नाटक में पौराणिक प्रतीक के व्याज से वर्तमान वैयक्तिक एवं पारिवारिक संबंधों को उजागर किया है । आधुनिक शिक्षा के प्रसार तथा पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव ने परम्परागत दम्पत्तियों के जीवन मूल्यों के प्रति जिस अस्वीकृति एवं उदासीनता के स्वर मुखरित किये हैं , उस स्थिति का प्रत्यक्ष विश्लेषण हिन्दी नाटक की कथ्यगत उपयोगिता रही है । इस तरह प्रतीक नाटकों में स्त्री-पुरूष के आदर्शवादी रिश्तों पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए नाट्य लेखक ने अत्याधुनिक अनुभूतियों की पहचान करायी है । उसकी दृष्टि में अब न पति देवता है और न पत्नी दासी , जीवन यथार्थ की समतल भूमि पर दोनों का संबंध यौन दृष्टि तक ही सीमित है । यही कारण है कि आज प्राचीन अर्थों से जो दाम्पत्य बंधन के प्रतीक थे , वे सहज होते जा रहे हैं । दाम्पत्य रिश्तों में परंपरागत मर्यादा का अंत एवं स्वतंत्रता का आविर्भाव हो चुका है ।

आधुनिक वैज्ञानिक पृष्ठभूमि में सनातन सांस्कृतिक विचारों

के परिवर्तन के कारण अब धर्म की नई व्याख्या की जाने लगी है। ललित सहगल का नाटक, हत्या एक आकार की, बदलते धार्मिक मूल्यों का प्रतीक है, जिसमें गाँधी जी की हत्या को आधार बनाकर मनुष्य की आदिम प्रवृत्तियों और युगीन मूल्यों के तनाव को सूक्ष्मता के साथ दर्शाया गया है। नैतिकता को नई मूल्यगत अस्मिता की खोज समकालीन प्रतीक नाटक की उपलब्धिजन्य विशेषता को द्योतित करती है। इसमें मानवीय व्यथा, परिवेश, अनुभव सब कुछ पुराने नाटकों की अपेक्षा अलग है। साम्प्रदायिक संघर्षों को लेकर सांस्कृतिक तथ्यों का अनुसंधान इधर के नाटकों को प्रभावपूर्ण बनाता है। इस प्रकार समकालीन प्रतीक नाटकों ने जिस विघटन और संकट के कुहासे को झेला है तथा पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक सभी स्तरों पर जिस बोध को आत्मसात किया है उस सत्य की जीवंत और सार्थक अभिव्यंजना उनकी कृतियों में मौजूद है।

पश्चिमी नाटक से साक्षात्कार होने के कारण अब हिन्दी नाटककार की नाट्य चेतना नये-नये रूप लेने लगी है। नाट्य सृजन में पश्चिमी नाट्य तत्वों संघर्ष तत्व, ग गत्यात्मकता, संकलनत्रय, मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रण, दृश्यबंधों की कल्पना, अभिनय की नई प्रणालियों के विनियोग से नाट्य चेतना को एक नया रूप मिला है।

2- प्रतीक नाटकों का भविष्य :---

समकालीन हिन्दी नाटकों में प्रतीकात्मकता की प्रवृत्ति प्रायः प्रमुख है। समकालीन हिन्दी नाटककार नाटकीय प्रतीक विधान के प्रति विशिष्ट रूप से सचेत हैं। वह जिन परिस्थितियों से गुजर हह रहा है उसकी नाटकीय अभिव्यक्ति के लिए प्रतीकात्मक शैली ही अत्यन्त उपयुक्त है। हिन्दी में यथार्थवादी समस्याओं के चित्रण में सांकेतिक प्रतीकों का प्रयोग प्रसादोत्तर युग से प्रारंभ हुआ, साठोत्तरी नाटककारों ने इस परंपरा को और आगे बढ़ाया। समकालीन नाटकों में प्रतीक अभिव्यक्ति की एक विशिष्ट शैली है। संघर्ष का स्तर प्रतीक नाटकों में प्रमुख है, बाह्य बाह्य संघर्ष की अपेक्षा इसमें वैचारिक तथा मानसिक संघर्ष की आवश्यकता होती है। प्रतीक नाटक के पात्र अपनी प्रतीक रूप में प्रस्तुत होने के कारण सामान्य नाटक से अधिक दुरूह होते हैं। ऐसे पात्र दोहरे अर्थ की अभिव्यंजना के कारण कई बार मानसिक दृष्टि से दर्शक को थका देते हैं। इन नाटकों का

उद्देश्य किसी विशिष्ट अर्थ को व्यंजित करना होता है तथा वह इसी के अनुरूप घटनाओं , पात्रों और स्थितियों की सृष्टि करता है । कभी-कभी नाटक का शीर्षक जैसे - "एक और द्रोणाचार्य" कथा एक कंश की , मिस्टर अभिमन्यु, प्रतीकात्मक होने के कारण पूर्णरूप से नाटककार के उद्देश्य को ध्वनित करते है । प्रतीक नाटक का रहस्यमयी उद्देश्य अपनी अभिव्यक्ति के लिए भाषा की अतिरिक्त शक्ति और प्रौढ़ता की सदैव माँग करता है । इन नाटकों के संवाद दोहरे दायित्व का निर्वाह करते हुए मंचित किये जाने वाले कथानक को व्यंजित करने में सफल होते हैं । समकालीन रचनाधर्मियों ने आधुनिक जटिल समस्याओं के समाधान के लिए प्राचीन इतिहास और पौराणिक संदर्भों को नवीन ढंग से विश्लेषित किया है । ऐसे स्थिति में घटनाएँ पात्र और प्रसंग अतीतोन्मुखी होने पर भी इन नाटकों का जीवनदर्शन आधुनिक रहा है । वर्ग तथा व्यक्ति की उलझनों को सांकेतिक अभिव्यक्ति प्रदान करने में प्रतीक नाटक अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं । कई स्थलों पर पात्रों की समस्याएँ जन समूह की समस्यायें हैं ।

जहाँ तक प्रतीक नाटकों के भविष्य का प्रश्न है प्रतीक संदर्भ प्रस्तुत के माध्यम से अपने चारों ओर व्याप्त सामाजिक स्थितियों का खुली आँख से जायजा करता है । वह गणतंत्रीय प्रशासन के अत्याचार एवं अपहृत मानव अस्मिता से खंडित मानव अनुभूतियों को बारीकी से अंकित कर रहा है । सातवें या आठवे दशक में लिखे गये नाटकों को जब हम आज के संदर्भों में देखते हैं तो हमें यह ज्ञात होता है कि इन नाटकों में जो कुछ लिखा जा चुका है वह आज के जीवन में बड़ी बारीकी से घट रहा है । साठोत्तरी हिन्दी नाटकों में वर्णित राजनैतिक लक्ष्यहीनता और उसमें उत्पन्न गणतंत्रीय अनास्था का यदि हम अध्ययन करते हैं तो हमारी दृष्टि आज के जीवन में घट रही घटनाओं पर टिक जाती है । ऐसी परिस्थिति में नाटक भविष्य का दर्पण बनकर हमें रास्ता दिखाते हैं । जगदीश चन्द्र माथुर के "पहला राजा" नाटक में इस तथ्य की सूचना मिली है । डॉ0 लाल का नाटक "सूखा - सरोवर" गणतंत्र के मूल मानवीय सरोवर संकल्पों से विच्छेदित होने की दुर्नियति प्रस्तुत करता है । "रक्त कमल" में जनतंत्र के निर्वाचित घटकों के दलाल धर्म का यथार्थ है । "अब्दुल्ला दिवाना" गणतंत्र में राष्ट्रीयकरण के भयानक जंगल में खड़ा है ।

ज्ञानदेव अग्निहोत्तरी कृत "शुतुर्मुग" गणतंत्रीय प्रबंधों को अतीव निर्ममता से नोचता है । यदि हम आज के संदर्भ में इसे देखें तो वर्तमान राजनैतिक जीवन राजनैतिक दल तथा सत्ताधारियों में हो रही धाँधलेबाजी, अवसरवादिता , अनियमितता एवं अन्याय को किसी नारे का जामा पहनाकर जनता को गुमराह करने की असाधारण शक्ति को लेकर है ।

प्रतीक नाटकों का भविश्य उज्ज्वल होने का दूसरा कारण वह मानवीय संवेदनाओं से जुड़ा हुआ है । आधुनिक समाज के ईकाईभूत परिवार के गठन में परिवर्तन होने से तथा व्यक्ति स्वातंत्र्य एवं आणविक परिवार के उद्घोषण से विवाह संस्कार विषयक मान्यताओं में जो विकार एवं बदलाव की स्थिति निर्मित हुई है उसका प्रत्यक्ष निर्दर्शन प्रतीक नाटकों में मिलता है । रमेश बक्षी के "देवयानी का कहना है" नाटक में एक ऐसी आधुनिका की जिंदगी प्रस्तुत की है । वेद वाक्यों , आर्षवचनों , और पति पत्नी के बताये गये रिस्तों पर चलने के बजाय सेक्स केक्स सही स्थिति में संबंधों की माँग करती है । अब प्रतीक नाटकों का भविष्य नये मूल्यों और विचारों के साथ खुलकर सामने आ रहा है । समकालीन युग में लिखे गये हिन्दी नाटकों में प्रेम और योन संबधी नवीन विचारणा का उद्घाटन मिलता है । धर्म , नैतिकता, आदर्श संस्कार, रीति नीति जैसी रूढ़ियाँ उसे छोटी लगती हैं । आज के बदलते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने प्रेम और यवन को पाप पुण्य अ उचित अनुचित की धारा से मुक्ति दिला दी है । अब प्रेम के व्यवहारिक पक्ष में "सेक्स" चरित्र एवं संबंध तीनों पृथक सामाजिक चीजे हैं ।

3- उपसंहार :---

गूढ़ार्थ व्यंजना की दृष्टि से नाट्य साहित्य में प्रतीकों का महत्वपूर्ण स्थान है । पात्रों की समुचित संयोजना वातावरण एवं भाषा विधान आदि को ध्यान में रखकर प्रतीकों के माध्यम से नाटककार रचना को सशक्त रूप में संप्रेषित करने का प्रयास करता है । वस्तुत: फ्रांस के प्रतीकवादी आन्दोलन से प्रभावित होने के कारण समकालीन हिन्दी नाटकों में प्रतीकों का प्रयोग एक विशिष्ट रूप में किया जाने लगा । जिसके कारण रचनाओं में पात्र विचारों या सिद्धान्तों के प्रतीक रूप में आने लगे । पश्चिम में प्रतीक नाटक की शुरुवात करने वालों इब्सन की मुख्य भूमिका रही है । इन्हें प्रतीक शैली के नाटकार का जनक स्वीकार किया गया है । इब्सन तथा उनके अनुयायियों ने तत्कालीन पारिवारिक, सामाजिक मान्यताओं का सुन्दर विवेचन किया है । इनकी रचनाओं में प्रतीकात्मकता साकार - रूप में निखर कर सामने आई है । नाटक में प्रतीक का धर्म केवल इतना ही है कि वह संवेद्य बात को, तथ्य को शब्दों की अपेक्षा कहीं अधिक सीधे और शक्तिशाली ढ़ग तथा सुंदर रूप से प्रस्तुत कर सकें । इस प्रकार समकालीन हिन्दी नाटकों में प्रतीक अभिव्यक्ति की एक विशिष्ट शैली है, इसमें रचनाकार का कौशल दृष्टिगत होता है । इस प्रकार स्पष्ट हो जाता कि प्रतीक नाटक प्रतीकों के माध्यम से संप्रेषित होने वाला एक नाट्य शिल्प है । पश्चिम के प्रतीकवादी आन्दोलन के फलस्वरूप इस रचना पद्धति का प्रचलन हुआ । समसामयिक युग में इस प्रकार के प्रतीक पद्धति रचनासृजन के मूलभूत अंग के रूप में अभिव्यक्ति पा रही है । प्रतीक नाटकों की जैसी महत्वपूर्ण भूमिका समसामयिक युग में है वैसी पहले नहीं थी । स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात शुतुर्मुग, अब्दुल्ला दिवाना, भष्मासुर अभी जिन्दा है, राम की लड़ाई, तेंदुआ, कुत्ते, तीसरा हाँथी, रस गंदर्भ, सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, देवयानी का कहना है, द्रौपदी आदि जैसे नाटक एक आन्दोलन के रूप में आये । ये रंग कृतियाँ दर्शकों को फिल्म से भी अधिक मनोरंजन देने लगीं । वस्तु योजना और उसके मंचीय संप्रेषण की दिशा में ज्ञानदेव अग्निहोत्री शुतुर्मुग, मोहन राकेश का आधे-अधूरे, एक विशेष उपलब्धि के रूप में सामने आये हैं । यह नाटक एबसर्ड नाटकों की तीव्र अभिव्यंजना के साथ-साथ मानवीय जीवन के भयावह टुकड़ों को जोड़कर एक ही अंक में बहुत कुछ दिखा देने की सामर्थ्य रखते हैं । तेंदुआ, तिलचट्टा,

योर्सेफियुली, रसगंधर्व, त्रिशंकु , अब्दुल्ला दिवाना, आकाश झुक गया , सिंहासन खाली है , बकरी, शंबूक की हत्या, भष्मासुर अभी जिंदा है , अग्नलीक, दुलारीबाई , व नरसिंह कथा आदि नाटक बहु - आयामी होने के साथ साथ जीवन के विविध पक्षों को अभिव्यक्त करने में सफल हुए हैं । द्रौपदी, नरमेध, कुत्ते आदि नाटकों में एक नई तकनीक ईजाद की गई है । हिन्दी के समसामयिक प्रतीक नाटकों में प्राचीन पौराणिक संदर्भों के माध्यम से आधुनिक समसामयिक संदर्भों को उजागर करने की वस्तु तकनीक काफी प्रभावोत्पादक दिखाई पड़ती है । शोषण और सुविधा के पौराणिक संदर्भों का इस्तेमाल शंबूक की हत्या और भष्मासुर अभी जिंदा है आदि नाटकों में दृष्टिगोचर होता है । इन नाटकों में आज की सामयिक , राजनैतिक , धार्मिक , आर्थिक और मानवीय विसंगतियों की छाप स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है । मादाकैक्टस, बिना दीवारों के घर, कर्फ्यू, छटा बेटा , नरमेघ, लोटन , अमृत पुत्र आदि नाटकों कीमंचीयव्यवस्था प्रतीकात्मक और यथार्थमूलक है । शुतुर्मुर्ग और सिंहासन खाली है नाटकों की संपूर्ण प्रस्तुति एक सिंहासन की सहायता से हुई है । अब्दुल्ला दीवाना, यक्ष प्रश्न, तेंदुआ, कथा एक कंश की, आदि नाटकों की खुली और सादी मंच व्यवस्था है ।

दूसरी ओर इन समसामयिक प्रतीक नाटको में पात्रों और चरित्रों की प्रतीकात्मकता का आग्रह विशेष रूप से दिखाई देता है । योर्सेफियुली, कर्फ्यू, तिलचट्टा, तेंदुआ, अब्दुल्ला दीवाना , रस-गंधर्व , शंबूक की हत्या, बकरी आदि प्रतीक नाटकों में चरित्र का आशिल्पन दर्शनीय है । जहाँ वर्ग संप्रदाय, समूह, व्यक्तित्व या चरित्र , को खुले,या नंगे रूप में खोलकर रख दिया है । त्रिशंकु, सिंहासन खाली है और भष्मासुर अभी जिंदा है नाटकों के पात्रों को वर्गगत नामों से संबोधितक कर उनके चरित्र के अनेक पक्षों और विसंगतियों को प्रस्तुत करने में जिस शैली को अपनाया गया है वह निश्चय ही प्रतीक नाटकों के इतिहास में एक उपलब्धि है । "आकाश झुक गया है " नाटक में समसामयिक युगीन प्रवृत्ति प्रवृत्तियों को सशरीर रूप में प्रस्तुत कर आज के भौतिक रंग में रंगे हुए समाज के चरित्र को उभारा गया है । "कुत्ते " नाटक में आज की समस्याओं के चक्रव्यूह में घूमते हुए मर्मस्पर्शी चरित्रों को आकर्षक और स्वाभाविक शिल्प में स्थापित किया गया है ।

डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल का नाटक "मादाकैक्टस" स्त्री-पुरुष के संबंधों , सामाजिक मान्यताओं और पति-पत्नी के आदर्शों का

ब्योरा प्रस्तुत करता है । अति आधुनिक शिक्षा प्राप्त नारी आनन्दा सामाजिक मान्यताओं और पति-पत्नी के आदर्शों को घरौंदा मानती हैं । आनन्दा एक दूसरी मादाकैक्टस का प्रतीक है जो नए इन्सान का प्रतीक नरकैक्टस अरबिंद के संपर्क में आकर सूख जाती है । सुरेन्द्र वर्मा के द्रौपदी नाटक में नाटककार ने स्त्री - पात्रों तथा आधुनिक नारी समाज के कई वर्गों को सामने रखा है । डॉ0 लाल का कर्फ्यू नाटक इन्हीं सामाजिक विसंगतियों को संप्रेषित करने में सफल हुआ है । इस नाटक में मनीषा आधुनिक महिलाओं के उस वर्ग का प्रतिनिधि है जिन्होंने भावना के स्तर पर पारंपरिक, सामाजिक, संस्कारगत, बंधन के खेल को उखाड़कर फेंक दिया है । मनुष्योचित सच्चाई को नकारती है । वह बाहर निकलकर स्वछन्द भावना से प्रेरित होकर "कर्फ्यू"में पुलिस के हाथ पकड़ कर सामूहिक बलात्कार झेलती है । डॉ0 लाल का अब्दुल्ला दीवाना नाटक में अब्दुल्ला सामाजिक, नैतिक, मानवीय मूल्यों का प्रतीक है । स्त्री के लिए वह आउट डेटेड टेलर मास्टर है । इस नाटक में स्त्री आधुनिक प्रेमिका के रूप में है , स्वार्थी एवं अवसर - वादी संस्कार उसके आचरण में हैं । डॉ0 चन्द के "कुत्ते" नाटक में आधुनिक समाज की कार्यालयीन जिंदगी और आफिस में काम करती हुई युवतियों की विवशता को प्रतिबिम्बित किया गया है । जिसमें नारी पात्र केन्द्रिय चरित्र हैं । डॉ0 गिरिराज किशोर के नाटक "प्रजा ही रहने दो" में द्रौपदी प्रजा के स्वरूप का प्रतीक है । वह सामाजिक और राजनैतिक छल प्रपंच से सताई जाती है ।

राजनैतिक स्थितियों को बड़ी सहजता से संप्रेषित करने वाले नाटकों में मणि मधुकर का "रस गंधर्व" एक प्रतीक नाटक है जिसमें युवती की तीन भूमिकाएँ हैं राजकुमारी, युवती और जीवित पुतली, राजकुमारी के रूप में वह जीवित सत्ता का प्रतीक है । सुशील कुमार सिंह का "सिंहासन - खाली है" नाटक में राजनीतिक दाँव-पेंच को अभिव्यक्ति भी मिली है । दयाप्रकाश सिन्हा का नाटक"कथा एक कंश की" में स्वाती सत्ताधारी कंश की हरेक इच्छा पूरी करती है वह सत्ता की दौड़ में कंश के पीछे-पीछे भागती है । और अपने जीवन के प्रश्नों को कुचल देती है । नरेन्द्र कोहली का नाटक शंबूक की हत्या में कलर्क आजकल का वास्तविक शासक है , पुलिस सबइंस्पेक्टर वर्तमान जड़ व्यवस्था को संकेतित करते हैं । ब्रह्मण हमेशा से चले आते हुए समाज के सुविधाभोगी वर्ग के प्रतिनिधि हैं ।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि प्रतीकात्मकता की प्रवृत्ति समकालीन हिन्दी नाटकों में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव से विद्यमान है। नाटककारों ने इतिहास, पुराण आदि से पुराने कथानकों तथा चरित्रों को ग्रहण कर आधुनिक मानव की विसंगतियों और उनके जीवन-मूल्यों, उनकी भावनाओं तथा उनके नवीन विचारों को अभिव्यक्ति दी है।